पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित 16.10.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालयः आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाषः 9810117464, 9868051444

131 वें महर्षि दयानन्द जी के बलिदान दिवस पर
संगीत संध्या
शुक्रवार, 24 अक्तुबर 2014
सांय 4 से 8 बजे तक
दिल्ली हाट, जनकपुरी, दिल्ली
आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

वर्ष-31 अंक-10 कार्तिक-2071 दयानन्दाब्द 190 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48रु.
प्रकाशितः 16.10.2014 E-mail:aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website: www.aryayuvakparishad.com

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय व सांसद श्री प्रवेश वर्मा का अभिनन्दन

मंगलवार, 14 अक्तुबर 2014,नवनिर्वाचित भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय व युवा सांसद श्री प्रवेश वर्मा से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रतिनिधि मण्डल ने भेंट कर शुभकामनाऐं प्रदान की तथा शाल व स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन किया । परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य,दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता,श्री सत्यपाल सैनी,आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,श्री अनिल हाण्डा,श्री सत्यपाल सैनी,श्री बलजीत आदित्य आदि सम्मलित हुए ।

दिल्ली चलो ओ३म् दिल्ली चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

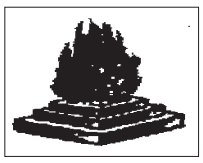

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2015 (शनि, रवि व सोमवार)

स्थानः कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव (निकट ग्रीन पार्क मैट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-29

विराट् शोभा यात्राः शनिवार 24 जनवरी 2015, प्रातः 10:30 बजे
शुभारम्भः कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी

मुख्य आकर्षण

* नारी शक्ति सम्मेलन
* वेद सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* आर्य युवा सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2014 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2014 तक फोन नः श्री प्रकाश वीर-9811757437, श्री ओम बीर-9868803585, श्री सत्यपाल-9899200447, श्री राणा जी-9868089983 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है
कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''
के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल,
चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

आनन्द चौहान	डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	रविदेव गुप्ता	चतरसिंह नागर
दर्शन अग्निहोत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मंत्री
प्रभात शेखर	9810117464	9013137070	9871581398	9818006185	9211501545

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहुजा, रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुभाष बब्बर
राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, मनोहरलाल चावला
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य, संतोष शास्त्री
राष्ट्रीय मंत्री

'ईश्वर कहां है, कैसा है और उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है?'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

इससे पूर्व कि हम विषय पर चर्चा करें पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि ईश्वर क्या है। इसका उत्तर है कि जिससे यह संसार बना है, चल रहा है व अवधि पूर्ण होने पर जो इस ब्रह्माण्ड की प्रलय करेगा, उसे ईश्वर कहते हैं। वह ईश्वर कैसा है तो चारों वेद, उपनिशद व दर्शन सहित सभी आर्ष ग्रन्थों ने बताया है कि ईश्वर – ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। (सभी मनुष्यों को) उसी की उपासना करनी योग्य है। ..... ईश्वर कि जिसको ब्रह्म, परमात्मादि नामों से कहते हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानसुार सत्य न्याय से फलप्रदाता आदि लक्षणयुक्त है, वह परमेश्वर है, (मैं) उसी को मानता हूं। ..... जिसके गुण–कर्म–स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक, अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त, सत्य गुणवाला है, और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप–पुण्य के फल ठीक–ठीक पहुंचाना है, उसी को ईश्वर कहते हैं।'' यह शब्द महर्षि दयानन्द के उनके अपने ग्रन्थों में कहे व लिखे गये हैं। इससे अधिक प्रमाणिक, विश्वसनीय एवं विवेकपूर्ण उत्तर ईश्वर के स्वरूप व उसकी सत्ता का नहीं हो सकता। ईश्वर विषयक यह स्वरूप वेदों से तो पुश्ट है ही, तर्कपूर्ण व सृश्टिक्रम के अनुकुल होने से विज्ञान से भी पुष्ट है। ईश्वर का स्वरूप इतना ही नहीं है अपितु कहीं अधिक व्यापक व विस्तृत है। इसके लिए हमारे जिज्ञासु बन्धुओं को वेद, दर्शन, उपनिषद् सहित महर्षि दयानन्द के साहित्य जिसमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाश्य भूमिका, आर्याभिविनय एवं अन्य ग्रन्थों सहित उनकावेद भाग्य भी है, का अध्ययन करना चाहिये।

अब इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि ईश्वर कहां है? इसका उत्तर है कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से सर्वत्र अर्थात् सभी स्थानों पर है। सर्वत्र और सर्वव्यापक शब्दों का अर्थ है कि उसका कहीं कोई ओर और कोई छोर नहीं है। ईश्वर सर्वान्तर्यामी भी है जिस कारण से वह हम सबकी आत्माओं के भीतर भी विद्यमान है। विश्व में बहुत से ऐसे मत, सम्प्रदाय व मजहब आदि हैं जो ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी नहीं मानते हैं। उनके ग्रन्थों के अनुसार ईश्वर एकदेशी है। एकदेशी होने का अर्थ होता है कि किसी एक स्थान विषेश पर रहने वाला। यदि ईश्वर एकदेशी हो तो यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि वह संसार या ब्रह्माण्ड की रचना कदापि नहीं कर सकता। जब वह सूर्य में है ही नही तो सूर्य कैसे बना सकेगा, कदापि नहीं बना सकता। चन्द्र पर यदि वह नहीं है, तो चन्द्रमा भी उसके द्वारा नहीं बनेगा। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड में जितने भी ग्रह, उपग्रह, लोक–लोकान्तर व नक्षत्र आदि हैं, वह एकदेशी ईश्वर से कदापि नहीं बन सकते। यह ब्रह्माण्ड जिसने बनाया है उसका सर्वदेशी, सर्वव्यापक, निराकार, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अनादि, नित्य, अमर, अजर, अभय, पवित्र, न्यायकारी, दयालु आदि होना अपरिहार्य व आवश्यक है। क्योंकि ब्रह्माण्ड ''सत्य'' है अतः ईश्वर का पूर्व पंक्तियों में वर्णित स्वरूप भी सत्य है। इसके विपरीत कहीं कुछ भी क्यों न लिखा व कहा जाता हो, वह सत्य कदापि नहीं हो सकता। अतः ईश्वर कहां है, इसका उत्तर है कि ईश्वर इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र है। कोई स्थान ऐसा नहीं है, जहां ईश्वर का वास न हो।

अब ईश्वर कैसा है?इस प्रश्न पर विचार करते हैं। इसका उत्तर भी महर्षि दयानन्द के शब्दों में पूर्व पंक्तियों में दिया गया है। ईश्वर सत्य, चित्त, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त एवं निराकार आदि गुण व स्वरूप वाला है। उसके इन सभी गुणों का ध्यान करने से उससे मित्रता व मेल होता है। मेल होने से उपास्य के गुण उपासक में आते जाते हैं जैसे कि शीत से आतुर मनुष्य का अग्नि के समीप जाने पर शीत निवृत होकर उसमें अग्नि के ताप आदि गुण आ जाते हैं। संसार में जितने भी पदार्थ हैं उनमें सर्वश्रेष्ठ केवल एक ईश्वर ही है। इसके बाद पूर्णज्ञानी, निःस्वाथी, निर्लोभी, परोपकारी, सर्वहितकारी, दयालु गुणों वाले व्यक्ति होते हैं जिनमें हम अपने सभी ऋशि–मुनियों यथा आदि ऋषि ब्रह्मा जी, मनु महाराज, पतंजलि, कपिल, कणाद, गौतम, वेद व्यास, जैमिनी व दयानन्द जी आदि को ले सकते हैं। महाभारत व महर्षि जैमिनी के बाद अब तक उत्पन्न सभी ऋषियों के समान वा कुछ अधिक महर्षि दयानन्द एक ऐसे पुरूश हुए हैं जिनके समान संसार के इतिहास में दूसरा मनुष्य नहीं हुआ है। अन्य अनेक महापुरूष अवश्य हुए परन्तु वह गुणों व कार्यों की दृष्टि से उनके कुछ–कुछ समान या कम थे। उनकी कृपा से आज हमें ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के गुणों व स्वरूप का ज्ञान होने के साथ सही विधि से ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, पितृ–अतिथि व बलि वैश्व देव यज्ञ करने की विधि के साथ अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान ऐसा है कि जिससे संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु ''मोक्ष'' प्राप्त की जा सकती है।

आईये, अब विचार करते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति कैसे की जा सकती है। इससे पूर्व कि हम इस विशय में विचार करें, पहले जीवात्मा का स्वरूप जान लेना आवश्यक है। ईश्वर से भिन्न एक अन्य सत्य, चेतन, अनादि, अजन्मा, नित्य, अमर, सूक्ष्म, एकदेशी, निराकार, अल्पज्ञ, जन्म–मरण–कर्म–फल–भोग–अपवर्ग में फंसा हुआ 'जीवात्मा' है। इस जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, वायु इसे सुखा नहीं सकती, मृत्यु के बाद भी इसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता तथा जल इसे गला नहीं सकता। महर्शि दयानन्द जीवात्मा का ऐसा ही स्वरूप स्वीकार करते हैं जो कि वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों से पुष्ट है। उन्होंने अज्ञानियों के ज्ञानार्थ इसका प्रचार किया। इसी प्रकार से वह तीसरे तत्व प्रकृति की दो अवस्थायें बताते हैं जिनमें एक कारण अवस्था है और दूसरी कार्य अवस्था। कारण अवस्था में यह अति सूक्ष्म, सत्व, रज व तम गुणों की साम्यावस्था है तथा ईश्वर के अधीन नियंत्रण में रहती है। सारा आकाश इसके अति सूक्ष्म कणों से भरा हुआ होता है। इसी, कारण–प्रकृति से ईश्वर रचना कर परमाणु आदि अथवा महत्तत्व, अहंकार, पांच तन्मात्रायें आदि बनाकर यह सृष्टि व ब्रह्माण्ड जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्र आदि हैं, निर्माण करता है। महर्षि दयानन्द व उनसे पूर्व अनेकानेक पूज्य ऋषियों द्वारा प्रस्तुत ज्ञान ही सत्य, यथार्थ व वास्तविक है। यह ज्ञान वेदों का पवित्र व शुद्ध ज्ञान है।

हम सब प्राणी 'जीवात्मा' हैं जिन्हें ईश्वर को प्राप्त करना है। बहुत धन कमा कर, भव्य कोठी, बंगला, कार, बैंक बैलेन्स, शारीरिक बल, शास्त्र ज्ञान आदि से भी ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर प्राप्त होता है उसके घ्यान व उपासना से। ध्यान कहते हैं ईश्वर के सत्य गुणों को जानकर विवेक पूर्वक उनका चिन्तन व श्रेष्ठ कार्य उपासना आदि को करके उन्हें ईश्वर को समर्पित करना। आसन व प्राणायाम भी उपासना में सहायक होते हैं और साधन का काम करते हैं। स्वाध्याय, सत्पुरूषों का संग, ध्यान व चिन्तन तथा वैराग्य से ईश्वर से निकटता होती है। इस निकटता को बढ़ा कर अर्थात् अधिकाधिक उपासना करके ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर को प्राप्त करना ईश्वर का साक्षात्कार करना है जो कि योग विधि से उपासना करके समाधि अवस्था में होता है। इसका विस्तृत ज्ञान महर्षि पतंजलि के ग्रन्थ योग दर्शन में उपलब्ध है जिसके अनेक विद्वानों के भाष्य व टीकायें उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से ध्यान व उपासना को सिद्ध कर साध्य को प्राप्त किया जा सकता है। समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार करना एक अति महत्वपूर्ण कार्य है जो कठिन अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं है। इसका कारण है कि योग दर्शन का ज्ञान महर्षि पतंजलि के अनुभवों पर आधारित होने तथा उनके बाद व पूर्व अनेक ऋषियों, महर्षियों, योगियों, ज्ञानियों, यतियों, मुनियों सहित महर्षि दयानन्द ने इसे सिद्ध किया है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए योग का आश्रय व अभ्यास करना परमावश्यक है अन्यथा जीवन का उद्देश्य अपूर्ण रहने से बहुत बड़ी हानि होती है। मत–मतान्तरों व मजहब से ऊपर उठकर सभी को योग की शरण में आकर अपना जीवन सफल सिद्ध करना चाहिये। समाधि के सिद्ध होने पर जीवनमुक्त अवस्था की प्राप्ति होती है। इस अवस्था की प्राप्ति के बाद मृत्यु पर्यन्त योगी व्यक्ति निष्काम कर्म करते हुए व्यतीत करता है और मृत्यु होने पर जन्म–मरण से छूटकर मोक्ष व मुक्ति को प्राप्त होता है। यह अवस्था जीवन में दुःखों की सर्वथा निवृत्ति एवं पूर्ण आनन्द की होती है। इस मुक्ति की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्शों की अवधि है। इस मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का परम व चरम उद्देश्य व लक्ष्य है। इसके प्राप्त होने पर कुछ भी करणीय शेष नहीं रहता। लौकिक उदाहरण से यदि समझना है तो यह कह सकते हैं कि यह कुछ–कुछ ऐसा है जैसे कि किसी आजीवन कारावास प्राप्त व्यक्ति की सजा माफ होकर उसे सदा सदा के लिए जेल से मुक्त कर दिया जाये। यह उदाहरण मोक्ष में प्राप्त होने वाले आनन्द की तुलना में अति हेय व निम्न है। मोक्ष के सुख का तो शब्दों में वर्णन ही नहीं किया जा सकता। हम पाठक मित्रों से अनुग्रह करते हैं कि वह महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित तथा उनके सभी साहित्य मुख्यतः सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य, आर्याभिविनय, ऋग्वेद–यजुर्वेद भाष्य, उपदेश मंजरी, शास्त्रार्थ संग्रह, उनका समस्त पत्र–व्यवहार आदि का बार–बार अध्ययन करें और योगाभ्यास करके इष्ट की प्राप्ति करें। इन्हीं शब्दों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं।

दीपावली पर
अपने मित्रों को उपहार दीजिए
चारों वेदों का सेट
केवल ₹ 2100/- में
बुक करवायें
संम्पर्क करें:
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, 3/5 आसिफ अली रोड, नई दिल्ली-2
फोनः 011-23260985, 23274771

आपसी फूट

आपसी फूट का राजरोग हमारे देश की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक और वर्शों तक पहले मुगलों और फिर अंग्रेजों की गुलामी का कारण रहा है। इस कड़वे यथार्थ से हम सभी भली–भांति परिचित हैं। कैसे आपस की फूट से रावण की सोने की लंका का सत्यानाश हो गया। पृथ्वीराज चौहान से जयचंद का द्वेष भाव और आपसी फूट से भारत वर्षों तक पराधीन रहा। इसके बाद छोटे छोटे रजवाड़ों में बंटे देश पर फूट डालो राज करो की नीति पर चलकर व्यापार करने आए अंग्रेजों ने शासन किया। सोने की चिड़िया कहलाने वाले इस देश का दोहन करके इसे दोनों हाथों से भरपूर लूटा। जब भी दो भाई आपस में लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर उसका फायदा उठाता है। बिल्लियों की लड़ाई में बंदर का न्याय।

अथर्ववेद में वेद भगवान आदेश देते हैं ''मिथो विघ्नाना उपयन्तु मृत्युम्'' अथर्व. 6 ।32 ।3 अर्थात परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वेद भगवान के निर्देश और इतिहास की सीख के बावजूद हमारे देश जाति को लगा यह आपसी फूट का राजरोग जाने का नाम ही नहीं ले रहा। किसी भी बीमारी का इलाज करने के लिए उसके कारणों को जानना अत्यंत आवश्यक है। पूरे विश्व को मार्ग दिखाकर नेतृत्व करने की क्षमता रखने वाला हमारा देश जैसे इस आपसी फूट का शिकार होकर स्वयं ही पथ से भटक चुका है और शायद इस तथाकथित विकास की चकाचौंध में सम्मोहित पाश्चात्य अंधानुकरण करता हुआ अपनी दशा और दिशा खोकर अपने लक्ष्य से दूर होता जा रहा है। इस देश की सर्वश्रेश्ठ पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति का पोशक आर्य समाज भी अपने श्रेष्ठतम सत्य सिद्धांतों के बावजूद आपसी फूट के राजरोग का शिकार हो चुका है। इसके कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो केवल अधिकारियों की पद लोलुपता, लोकेष की भावना और येन केन प्रकारेण अपने अपने पद पर चिपके रहने की इच्छा ही इस आपसी फूट का कारण हैं। लगभग हर आर्य समाज में लेकर प्रत्येक राज्य की सभाओं, युवा संगठनों, राष्ट्रीय वा सार्वदेशिक सभाओं की यही स्थिति है। इनकी अधिकतर शक्ति वेद प्रचार, आर्य सिद्धांतों के प्रसार परोपकार के कार्यों में ना लगा कर अपने अपने संगठनों में झगड़ों, अदालती मामलों और एक दूसरे की टांग खिंचाई में लग रही है। जितना खर्च, उर्जा कोर्ट केसों में हो रहा है उतना यदि यह सभायें वेद प्रचार में लगा दें तो कृण्वन्तो विश्वमार्यम का देव दयानन्द का संकल्प पूरा हो सकता है।

हम सभी यदि स्वयं को आर्य अर्थात श्रेष्ठ कहते हैं महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धांतों को मानते हुए दयानन्दी परिवार के सदस्य हैं तो हमारा दायित्व बनता है कि इन संबंधों की गरिमा को बना कर रखें। लेकिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अधिकांश आर्य समाजों में जो जिस पद पर एक बार चिपक गया बस उसके बाद वह सारी उर्जा येन केन प्रकारेण उस पर बने रहने के लिए तथा अन्य उसकी टांग खींचकर उतारने के लिए लगा देते हैं। अब तो यदि किसी आर्य को एक शहर से दूसरे शहर में जाकर रहना पड़े तो नए शहर में उसको कोई स्वीकार करने के लिए भी जल्दी तैयार नहीं होता। आपसी फूट के कारण हम केकड़ा संस्कृति के अनुगामी हो चुके हैं और इतने खुले वातावरण में भी कूप मंडूक बनकर टर्रा रहे हैं। आर्य समाजों में निरंतर घटती संख्या का यह एक मुख्य कारण है और यह समस्या केवल आर्य समाजों तक नहीं अपितु पूरी जाति समाज और राष्ट्र की हो चुकी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर हम पूरे समाज राष्ट्र को जाति भाषा क्षेत्र के कबीलों में बांटकर लड़वा रहे हैं और उसी अंग्रेजी नीति फूट डालो और राज करो पर चल रहे हैं।

वेद भगवान आदेश देते हैं मा भ्राता भ्रातारं द्विक्षत् । अथर्व. 3 ।30 । 3 अर्थात भाई–भाई से द्वेष ना करें। वेद भगवान के इस आदेश को मानकर पहले हम सभी दयानन्दी परिवार के सदस्यों एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव को त्याग कर 'संगच्छध्वं' की भावना के साथ कार्य करते हुए परस्पर सहयोग करके अपनी दशा दिशा सुधार कर धर्म के मार्ग पर चलकर स्वयं खुद को परिवार समाज वा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले चलें। इस आपसी फूट की बीमारी का इलाज करने के लिए हमें उन स्वार्थी पद लोलुप लोगों को पहचान कर रास्ते से हटाना होगा जो अपनी पद लोलुपता और सत्ता प्राप्ति के कारण हमें आपस में लड़वा रहे हैं। आपसी फूट के इस राजरोग को जड़ से मिटाकर भाई भाई से प्रेम करते हुए विश्व के सर्वश्रेष्ठ संगठन के श्रेष्ठतम सिद्धांतों के पथ पर पूरे विश्व को एक साथ लेकर चलें तभी हम सभी का कल्याण संभव है अन्यथा इस आपसी फूट के कारण हम एक बार फिर गुलाम हो जायेंगे तब आने वाली पीढ़ियां हमसे यह प्रश्न पूछेगी तो हमारे पास इसका कोई उत्तर नहीं होगा और हम भी जुए में हारे पांडवों की तरह चुपचाप सिर झुकाए अपनी भारत माता के द्रोपदी चीरहरण को देखने के लिए विवश होंगे।

नरेन्द्र आहूजा
'विवेक' 602 जीएच 53 सैक्टर 20 पंचकूला
दूरभाश 01724001895, 09467608686

संस्कृत की भाषा

आज जो भाषा जानते हैं उसी भाषा का साहित्य आप पढ़ेंगे। जो साहित्य आप पढ़ेंगे उसी में वर्णित सभ्यता और संस्कृति को आप जान पाएंगे और अन्त में उसी को अपनाएंगे। उसी भाषा में तथा उसी संस्कृति के हिसाब से आप अपने बच्चों के नाम रखेंगे। उर्दू, अरबी, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अंग्रेजी भाषाओं को पढ़ने वालों के उदाहरण हम सबके सामने हैं। मैं सिरफ इस भाषाओं को ही ले रहा हूँ क्योंकि हम लोग इन्हीं भाषा भाषियों के बीच मं रह रहे हैं।

अरबी–फारसी पढ़ने वाले कुरान पढ़कर जेहादी और आतंकी बन रहे हैं। उन्होंने अपनी गतिविधियों से सारी दुनियां को तड़पा रखा है। वे विश्व से इंसानियत को मिटाने पर तुले हैं। हिन्दी और संस्कृत पढ़ने वाले वेद के आदेश 'मनुर्भव – मनुष्य बनो' की बता करते हैं और 'सर्वे भवन्तु सुखिन :- सभी सुखी हों, की कामना करते हैं। उर्दू पढ़ने वाले गालिब के निराशापूर्ण शेयर और दूसरे उर्दू के कवियों की इश्किया शेयरो–शायरी करते देखे जाते हैं। वे शराब और मयखाने की बात पर मस्ती से झूमने लगते हैं। पंजाबी वाले पंजाब, पंजाबी और पंजाबियत का ढिंढोरा पीटते हैं। पंजाब के अकाली नेता हिन्दी भाषा से नफरत करते हैं।

भाषाओं का सम्बन्ध सम्प्रदायों से भी है। उर्दू, अरबी, फारसी मुस्लमानों की भाषा है। पंजाबी सिखों की भाषा है। अंग्रेजी अंग्रेजों की भाषा है। हिन्दी, संस्कृत हिन्दूओं और आर्यों की भाषा है।

जो पुस्तक जिस भाषा में लिखी गई है उसे उसी भाषा में पढ़ने से ही उसके आशय को पूरी तरह समझा जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश हिन्दी भाषा में लिखा है। उसके अंग्रेजी अनुवाद को पढ़ने वाला व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश की वास्तविक भावना और विषयों को उतनी गहराई से नहीं पकड़ पाता जितना कि हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने वाला व्यक्ति जान पाता है।

संस्कृत भाषा में वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, विदुरनीति आदि वैदिक साहित्य संसार के सभी साहित्यों में सर्वोत्तम है। उस सारे साहित्य के मर्म को जानने के लिए संस्कृत भाषा का जानना परम आवश्यक है। हिन्दी भाषा से कुछ काम चलाया जा सकता है क्योंकि हिन्दी भाषा की लिपि वही है जो संस्कृत की है और हिन्दी भाषा में बहुत से शब्द संस्कृत भाषा से ही लिए गए है।

हम वैदिक धर्मी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि मतों के पुजारी नहीं हैं। हम मानवतावादी हैं और मानवता के पुजारी हैं। हमें देखना है कि विज्ञानसम्मत, तर्कपूर्ण, बुद्धिपूर्वक, प्रकृति के अनुकूल और मानवतावादी साहित्य किस भाषा में है। फिर उस भाषा को जानना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। वह भाषा संस्कृत ही है। हिन्दी और संस्कृत के सिवाए अन्य भाषाएं आवश्यकता और इच्छानुसार पढ़ी–पढ़ाई जा सकती हैं, परन्तु संस्कृत भाषा के महत्त्व को कम करके आंकना सरासर गलत है।

अगस्त 2014 की पत्रिका में इस विषय पर लाला लाजपत राय तथा महात्मा आनन्द स्वामी के कुछ छपे हैं। उन पर विचार करना भी जरूरी हो जाता है। लाला लाजपत राय के शब्द छपे हैं– 'स्वामी दयानन्द को जिन लोगों ने समझा वे इंग्लिश जानने वाले थे। संस्कृत जानने वाले तो उनके हर पल विरोधी थे।' मैं समझता हूँ कि इसका कारण संस्कृत भाषा नहीं, अपितु संस्कृत भाषा में जो पुराण आदि अवैदिक पुस्तकें वे पढ़ते हैं, वे थीं। पुराण तर्कहीन, अनर्गल, बेतुका, अमानवीय और गलत बातों से भरे पड़ें हैं। ऐसी पुस्तकों को पढ़ने वाले व्यक्ति भला महर्षि दयानन्द की तकपूर्ण वेदसम्मत बातों को कैसे स्वीकार कर सकते थे।

दूसरी बात– महात्मा आनन्द स्वामी के शब्द–'हिन्दी रक्षा आन्दोलन के बाद ईमानदारी से मैंने एक बात जो समझी वह थी कि आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। भाषा पर अपनी शक्ति खर्च करने की बजाय प्रचार में शक्ति खर्चे।' इसके उत्तर में– पंजाब के 1957 के हिन्दी सत्याग्रह से मैं भी जुड़ा रहा हूँ। महात्मा आनन्द स्वामी जी के ये शब्द आज तक मेरे सुनने या पढ़ने में कभी नहीं आए थे। इसलिए महात्मा आनन्द स्वामी जी पर कोई भी टिप्पणी न करते हुए मैं इन शब्दों को लेता हूँ 'आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं है।' मैं इन शब्दों से पूरी तरह असहमत हूँ। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित आर्य समाज का सारा साहित्य हिन्दी या संस्कृत भाषा में है। क्या हम महर्षि दयानन्द की लेखनी को पढ़ने के लिए दूसरी भाषाओं का सहारा लेंगे?और भी, 1970 में पंजाब में जब सभी शिक्षण संस्थाओं में पंजाबी भाषा को अनिवार्य रूप से शिक्षा का माध्यम घोषित कर दिया गया था तब डी. ए.वी. संस्था ने सर्वोच्च न्यायालय में उस आदेश के खिलाफ अपील की थी कि आर्य समाज की भाषा हिन्दी है और पंजाब में आर्य समाजी भाषायी अल्पसंख्यक हैं। अतः उन्हें हिन्दी भाषा को शिक्षा का माध्यम रखने की छूट हो। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तर्क को स्वीकार किया था और 5 मई 1971 को निर्णय दे दिया था।

– **कृष्णचन्द्र गर्ग**
831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, 0172–4010679

तपोवन आश्रम का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 12 अक्तुबर 2014,वैदिक साधन आश्रम,तपोवन,देहरादून का शरद उत्सव सम्पन्न हुआ । स्वामी आर्य वेश जी,स्वामी आर्येश,डा.धनजंय आचार्य,स्वामी दिव्यानन्द जी,आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य,आचार्या नंदिता शास्त्री,आचार्या अन्नपूर्णा जी के उद्बोधन हुए । प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री ने आभार व्यक्त किया व मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने कुशल संचालन किया ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

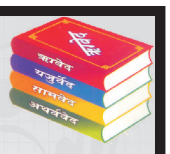

योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान

पूज्य **स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी**

के 75 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

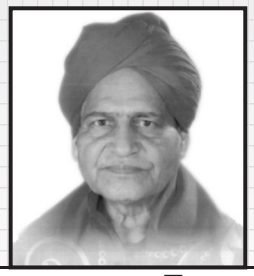

अमृत महोत्सव

रविवार 16 नवम्बर 2014, प्रातः 9 से दोपहर 2 बजे तक

स्थानः योग निकेतन सभागार, रोड नं. 78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26

(स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपः स्थली)

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

दर्शनाभिलाषी

स्वामी आर्यवेश अध्यक्ष	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती उपाध्यक्ष	दर्शन कुमार अग्निहोत्री स्वागताध्यक्ष	डॉ. अनिल आर्य मुख्य संयोजक
मायाप्रकाश त्यागी स्वागत मंत्री	आचार्य प्रेमपाल शास्त्री उपाध्यक्ष	डॉ. ओमप्रकाश अग्रवाल कोषाध्यक्ष	रामेश्वर गोयल मंत्री योग निकेतन
वैद्य इंन्द्रदेव प्रचार मंत्री	मुकेश मेधार्थी * महेन्द्र भाई * माता सुषमायति संयोजक गण		डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान सम्पादक अभिनंदन ग्रंथ

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समारोह समिति

सम्पर्कः 9810117464, 9013783101, ई-मेलः aryayouthn@gmail.com

कार्यक्रम

यज्ञः प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक–ब्रह्माः डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार

अध्यक्षताः स्वामी आर्य वेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

ध्वजारोहणः श्री मायाप्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

अभिनन्दन समारोहः प्रातः 10:30 से 2:00 बजे तक

आशीर्वाद

स्वामी सुमेधानन्द जी	स्वामी सत्यपति जी	स्वामी विवेकानन्द जी
स्वामी धर्मानन्द जी	स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी	स्वामी धर्म मुनि जी
स्वामी अग्निवेश जी	आचार्य बलदेव जी	स्वामी चन्द्रवेश जी
स्वामी यतीश्वरानन्द जी	स्वामी जीवनानन्द जी	स्वामी रामवेश जी
स्वामी प्रणवानन्द जी	स्वामी ओमवेश जी	स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

मुख्य अतिथि

पद्म श्री बृजमोहन लाल मुन्जाल जी (चेयरमेन हीरो मोटो कार्प)

डॉ. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान नई दिल्ली)

डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा)

श्री सतीश उपाध्याय (प्रदेश अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी)

श्री प्रवेश वर्मा (संसद सदस्य)

विशिष्ट अतिथि

श्री आनन्द चौहान	श्री महाशय धर्मपाल	आचार्य अखिलेश्वर जी
श्री योगेश मुन्जाल	श्री सत्यव्रत सामवेदी	श्री पूनम सूरी
श्री सत्यानन्द आर्य	चौ. हरिसिंह सैनी	श्री मिठाई लाल सिंह
श्री आनन्द कुमार	श्री देवेन्द्र पाल वर्मा	श्रीमती इन्दु पुरी
डा. सुरेन्द्र कुमार	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा	डा. महावीर अग्रवाल
प्रो. विठ्ठल राव आर्य	श्री अश्वनी कुमार शर्मा	श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय
श्री रूद्रसेन सिन्धु	श्री नवीन रहेजा	श्री राकेश चोपड़ा

दोपहर 2 से 3 बजे तक- प्रीतिभोज, धन्यवाद व शांतिपाठ

प्रबंधकः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ता

आर्य समाज बैंक एनक्लेव,दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

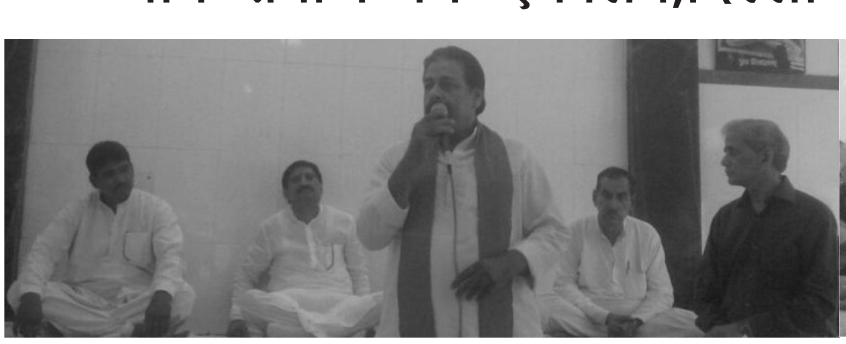

रविवार, 5 अक्तुबर 2014, आर्य समाज बैंक एनक्लेव,दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ । डा.अनिल आर्य उद्बोधन देते हुए । अध्यक्षता श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने की । विशिष्ट अतिथि श्री बी.बी. त्यागी,पार्षद,श्री यशोवीर आर्य आदि उपस्थित थे । श्री सौरभ गुप्ता के निर्देशन में परिषद् के युवकों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन के कार्यकम दिखाये । मन्त्री श्री जगदीश पाहुजा ने कुशल मंच संचालन किया ।

विशाखा एनक्लेव का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 12 अक्तुबर 2014,आर्य समाज विशाखा एनक्लेव,दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ । आचार्य संजीव के प्रवचन व श्री कुलदीप के मधुर भजन हुए । समापन पर दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री अरविन्द केजरीवाल,आचार्य परमदेव जी मीमांसक,डा.अनिल आर्य आदि के उद्बोधन हुए । प्रधान श्री रणसिंह राणा ने आभार व्यक्त किया व मंत्री श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने संचालन किया ।

श्री सौरभ गुप्ता–अरूण आर्य सम्मानित

आर्य समाज नगर शाहदरा,दिल्ली के उत्सव पर डा.अनिल आर्य शिक्षक श्री सौरभ गुप्ता,श्री अरूण आर्य व श्री माधव आर्य को सम्मानित करते हुए ।

श्री सोमनाथ आर्य पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के चुनाव में श्री सोमनाथ आर्य प्रधान, श्री नरेन्द्र कालरा–उपप्रधान,महामंत्री –श्री प्रभुदयाल चुटानी,श्री नरवीरलाल चौधरी–कोषाध्यक्ष,श्री बलदेव कृष्ण गुगलानी–मंत्री,श्री कन्हैयालाल आर्य–प्रेस सचिव,श्री एल.आर. मंगला–भण्डार अध्यक्ष व श्री ओमप्रकाश मनचन्दा–लेखा निरीक्षक चुने गये ।

हरिद्वार चलो

वैदिक विद्वान पंडित रामनाथ वेदालंकार की जन्म शताब्दी 2 नवम्बर 2014 को हरिद्वार में समारोह पूर्वक मनायी जाएगी आप सभी सपरिवार आमंत्रित हैं –मनमोहन आर्य

शोक समाचार–विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती सावित्री आर्या धर्मपत्नि स्व. श्री सूर्यदेव का निधन ।
2. श्रीमती शांतिदेवी सचदेवा,अशोक विहार,दिल्ली का निधन ।
3. श्री ओंकारचन्द सूद,शाहदरा,दिल्ली का निधन ।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाषः 41548503 मो. 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धकः** दिनेश आर्य मोबाईलः 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइलः 9958889970